

प्रेमियुनि परमात्मा

(१)

श्री मैगसि चंद्र कृपालु बापू महिर परिवर महरबान।

परम सुन्दर कमल कोमल दीन वत्सल दयावान॥

शील सिंधु सनेह सागर रूप उजागर रहनमा।

रहबर रसीला दासनि वसीला लादुला अथमि

लातमा॥

प्रेम परा खां पार प्रीतमु दर्द दिलि दीवानिड़ो।

संत शिरोमणि रोचल राजमणि

खलिक जो अथमि खानड़ो॥

सुखदेवी सुकुमार दासनि जो दिलदार अनूपम उदार

आत्मा।

सिकमें सियाणो रांझनु राणो प्रेमियुनि जो परमात्मा॥

जानिबु जोधो सरलु सूधो हीणनि जो हामी सदा।
कुरिब जी निधिड़ी क्यास जी सिधिड़ी दिलि वणे
दिलबर अदा॥

प्रीतमु प्यारो नैननि तारो जीअ जानि जो आधार आ।
सेव कमायां नितु गुण गायां सब्राझी सरकार आ॥